द्वितीय सेमेस्टर

<u>उद्देश्य</u> - इस कोर्स का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत (स्वरवाद्य) के प्रयोगत्मक पक्ष में दक्ष बनाना है।

क्र0 सं0	कोर्स का नाम	कोर्स कोड	अंक	श्रेयांक
4	**प्रयोगात्मक - 4**	एम0पी**0**ए0एम0आई0-5**0**8	**350**	**7**
प्रथम खण्ड	इकाई 1- मंच प्रदर्शन के राग एवं अन्य सभी रागों में रजाखानी गत, आलाप, जोड़, आलाप, तोड़े व झाला।			
	इकाई 2 - पाठ्यक्रमों के रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप, द्रुत गत व तोड़े।			
	इकाई 3 - अपने वाद्य को मिलाने का ज्ञान।			
	इकाई 4 - पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों की पढन्त ।			
	इकाई 5 - पाठ्यक्रम की तालों की लयकारी (दुगुन, तिगुन, चौगुन व आड़) में पढन्त।			
	इकाई 6 - पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा ।			

नोट – इस प्रश्न पत्र की सभी इकाईयां क्रियात्मक व प्रायोगिक होने के कारण प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर के लिए समान है। विद्यार्थी प्रथम सेमेस्टर एवं द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत रखे गए रागों एवं तालों के अनुरूप अध्ययन करें।

द्वितीय सेमेस्टर

राग - अहीर भैरव, झिंझोटी, बैरागी, बिहागड़ा व मालकौंस *ताल - झपताल, एकताल, रूपक व 9 मात्रा की ताल*

सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री -

1.वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, उ**0** प्र**0** ।
2. श्रीमती शान्ति गोवर्धन, संगीत शास्त्र दर्पण ।
3. डॉ**0** लक्ष्मीनारायण गर्ग,राग विशारद(दोनों भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ**0** प्र**0** ।
4. पं**0** विष्णु नारायण भातखण्डे, भातखण्डे क्रमिक पुस्तक मालिका (सभी भाग), संगीत कार्यालय, हाथरस, उ**0** प्र**0** ।
5. एस**0**एस**0** परान्जपे,भारतीय संगीत का इतिहास